एक अनूठा मन्दिर : विचार मन्दिर

-राजीव कुमार त्रिगर्ती

हिमाचल प्रदेश देवी देवताओं की भूमि है तथा विविध देवी-देवताओं के मन्दिरों को यहां स्थान-स्थान पर देखा जा सकता है। हिमाचल प्रदेश का जिला कांगड़ा अपने ऐतिहासिक तथा कलात्मक मन्दिरों के कारण पूरे विश्व में अपनी पहचान रखता है। कांगड़ा जिले के बैजनाथ क्षेत्र का बैजनाथ मन्दिर अपने सौन्दर्य, कला, प्राचीनता तथा पुराणों की विविध कथाओं से सम्बद्ध होने के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध है। इस मन्दिर के अतिरिक्त बैजनाथ क्षेत्र में सिद्धनाथ, शीतला, आशापुरी, तारिणी, पल्लिकेश्वर आदि अनेक प्रसिद्ध मन्दिर हैं जो जालन्धरपीठ-परिक्रमा में अपना विशेष महत्व रखते हैं।

देवी-देवताओं की भूमि के रूप में विख्यात हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के बैजनाथ में अपनी प्राचीनता तथा कलात्मकता के कारण विश्वविख्यात बैजनाथ मन्दिर से पूर्वोत्तर कोण पर कुछ दूरी पर बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में निर्मित भगवती तारिणी का एक भव्य मन्दिर है। यहां यन्त्र-प्राप्ति और मन्दिर निर्माण के साथ ऐतिहासिक घटना प्रमाण रूप में विद्यमान है। प्राचीन काल से ही अनेक सिद्ध-पीठों से विभूषित त्रिगर्त क्षेत्र में समय-समय पर अनेक साधकों का आगमन होता रहा है तथा उन्होंने अपने ज्ञान, कर्म तथा भक्ति से इस क्षेत्र में बौद्धिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक वातावरण को सुदृढ़ करने में अधिकाधिक योगदान दिया।

गुजरात प्रदेश में विक्रमी संवत् 1917 (सन् 1807 ई.) में जन्मे परिव्राजकाचार्य स्वामी तारानन्द तीर्थ भी एक ऐसे ही साधक हुए जो कांगड़ा क्षेत्र में भ्रमण करते हुए संस्कृत शिक्षा, तन्त्र तथा धर्म और संस्कृति का प्रचार करते हुए विक्रमी संवत् 1963-64 (सन् 1906-7 ई.) में बैजनाथ आए। बैजनाथ पहुंचने से पूर्व बनूरी गाँव में अपने निवास के दौरान इनसे प्रभावित होकर महाराज लम्बाग्रॉं श्रीजयचन्द्र वर्मा ने इनका शिष्यत्व स्वीकार किया। महाराज लम्बाग्रॉं को आदेश देकर विक्रमी संवत 1960 (सन् 1903 ई.) के लगभग इन्होंने बनूरी में ही एक संस्कृत पाठशाला प्रारम्भ करवायी और उसका नाम श्रीजयचन्द्रतारिणी संस्कृत पाठशाला रखा। इसके उपरान्त संस्कृत शिक्षा के प्रचार के निर्मित्त नगरोटा, ज्वालाजी तथा पपरोला में भी संस्कृत पाठशालाएं उद्घाटित कीं।

बैजनाथ आने पर भी सर्वप्रथम मन्दिर प्राङ्गण में उन्होंने संस्कृत विद्यालय ही खोला तथा वहीं कुटिया में निवास करने लगे। ये भगवती के अनन्य उपासक थे तथा तान्त्रिक विधियों में प्रवीण थे। 49 वर्ष की अवस्था में यहाँ रहते हुए इन्हें भगवती तारिणी ने स्वप्न में आदेश दिया कि बैजनाथ मन्दिर के पूर्वोत्तर कोण में कुछ दूरी पर श्रीकेदारेश्वर महादेव का मन्दिर है, वहीं झाड़ियों में पृथ्वी के नीचे छिपा हुआ श्रीयन्त्र है। उसका उद्धार करो। इस स्थान पर जालन्धर दैत्य को मारने के उपरान्त पापमुक्ति हेतु भगवान महादेव द्वारा वर्षों तक मेरी आराधना की गई है।

स्वामीजी ने खुदाई द्वारा इस यन्त्र को निकलवाकर विधिपूर्वक प्रतिष्ठादि कार्य को सम्पन्न करवाया तथा लम्बाग्रॉं के महाराज जयचन्द्र वर्मा के सहयोग से मन्दिर तथा अपने लिए एक कुटिया का निर्माण करवाया और वहीं निवास करने लगे।

तन्त्र-शास्त्र के अध्येता होने के कारण विभिन्न शास्त्रों के गूढ़ अध्ययन के उपरान्त अपनी कुटिया के दूसरे कमरे में आपने बड़े ही मनोयोग से विचार मन्दिर का निर्माण किया। मन्दिर वाले कमरे के बाहर संगमरमर की पट्टिका लगी हुई है जिस पर लिखा है कि इस विचार मन्दिर में प्रवेश की इच्छा रखने वाला व्यक्ति काम-क्रोध आदि पशुओं की ज्ञानरूपी खड्ग से बलि प्रदान कर स्वच्छ हृदय से अन्दर प्रविष्ट होकर विचार करें। यहां द्रव्यादि का चढ़ाना सर्वथा वर्जित है, इत्यादि।

इस कमरे के भीतर छोटे आकार का एक बड़ा ही सुन्दर मन्दिर संगमरमर का बना हुआ है। यह मन्दिर कोटी रियासत के युवराज वशिष्ट सिंहजी वर्मा तथा धर्म की अभिवृद्धि में प्रयत्नशील रहने वाले सोलन नरेश राजाधिराज दुर्गा सिंह ने बनवाया। विचार मन्दिर के नीचे पट्टिका पर कोटीश युवराज भी उत्कीर्ण है जो वशिष्ट सिंहजी के इसके निर्माण में सहायक होने का ही प्रतीक है।

इस मन्दिर के अन्दर संगमरमर की पट्टिकाओं का एक बड़ा ही सुन्दर त्रिकोण निर्मित किया गया है। इसके मध्य भाग में सुन्दर ओंकार को स्थापित किया गया है। ओंकार के अन्दर क-च-ट-त-प-य-श वर्णों को स्थापित किया गया है। त्रिकोण की तीनों पट्टिकाओं पर त्रिपदा गायत्रीमन्त्र को अंकित किया गया है। इस त्रिकोण के तीनों कोणों को स्पर्श करता हुआ एक गोला है जिसमें शताक्षरी गायत्री अंकित है। इस गोलाकृति के बाहर अष्टदल निर्मित है जिस पर अष्टधा प्रकृति के नाम क्रमश: इस प्रकार लिखे हुए हैं - खं, मन:, बुद्धि:, अंहकार:, भूमि:, आप:, अनल:, वायु:। इसके ऊपर संगमरमर से ही मन्दिर का निर्माण हुआ है। इसकी चारों दिशाओं में - 'प्रज्ञानं ब्रह्म', 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म', ये चारों महावाक्य उत्कीर्ण हैं। इस चक्र का नाम 'ताराऽर्धमात्राविवर्तोपासनाचक्र' है। यह मन्दिर प्रकोष्ठ के बीचोंबीच स्थित है तथा प्रकोष्ठ की दीवारों पर स्वामी तारानन्द द्वारा विरचित विविध दार्शनिक महत्व के श्लोक पट्टिकाओं पर उत्कीर्ण करके लगाए हुए हैं।

लम्बा ग्रां के राजा श्री जय चन्द्र वर्मा के आर्थिक सहयोग से स्वामी तारा नन्द जी द्वारा इस चक्र के सम्पूर्ण अर्थ को प्रकट करने हेतु 'ताराऽर्धमात्राविवर्तोपासनाचक्रमीमांसा' नामक ग्रन्थ की रचना की, जो इस चक्र के रहस्य को समझने में बड़ा ही सहायक है। स्वामीजी ने इस ग्रन्थ को लाहौर से प्रकाशित करवाया। यह ग्रन्थ लोगों विशेषकर दर्शन में रुचि रखने वाले विद्वानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए स्वामीजी द्वारा स्थापित श्री 108 शंकराचार्य पुस्तकालय, तारापुर, बैजनाथ में ही उपलब्ध करवाया जाता रहा। यह अति लघु ग्रन्थ हैं तथा इसे चार भागों / अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक भाग को पाद के नाम से उल्लिखित किया गया है। प्रत्येक पाद में चार-चार सूत्र हैं। इन सूत्रों को ग्रन्थ में कला कहा गया है। इस तरह चार पदों में कुल मिलाकर सोलह कलाएँ हैं। स्वामी तारानन्दजी ने सभी सूत्रों के साथ-साथ उनका भाष्य भी किया है। दुर्भाग्य से इस ग्रन्थ में इसके प्रकाशन वर्ष का पता नहीं चलता।

विचार मन्दिर में स्थापित चक्र में निहित गूढतात्विक अर्थ के महत्व को सर्वजनसुलभ बनाने के लिए आयुर्वेदाचार्य पं. हरिदत्तशास्त्री द्वारा भाष्य का हिन्दी अनुवाद ईस्वी सन् 1938 ई. में लाहौर से ही प्रकाशित हुआ। इससे इतना तो स्पष्ट है कि मूल ग्रन्थ ईसवी सन् 1938 से पहले (विक्रमी संवत् 1995 से पूर्व) ही प्रकाशित हुआ और विचार मन्दिर का निर्माण भी इससे कुछ वर्ष पूर्व या इसी काल में हुआ।

मूलरूप से चक्र एक प्रतीक है जिसमें भावना द्वारा उपास्य देव के रूप में अपनी आत्मा की ही पूजा की जाती है। स्वामी तारानन्दजी द्वारा स्थापित यह मन्दिर वास्तव में ही गम्भीर चिन्तन का अनोखा उदाहरण है। इसमें किसी मूर्ति की स्थापना नहीं है तथा प्रणव की उपासना के लिए त्रिकोणाकृति के माध्यम से ही प्रेरित किया गया है।

आज यह मन्दिर बैजनाथ में भगवती तारिणी के मन्दिर के पीछे जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। मन्दिर के बाहर बायीं तरफ स्वामी तारानन्दजी का समाधि-स्थल है।

मो: 09418193024